पुरानी पीढ़ी के बीच दिनानुदिन बढ़ती हुई वैचारिक दरारों का वर्णन मिलता है, तो दूसरी तरफ पूंजीवादी तत्वों द्वारा विज्ञापनबाजी के शातिराना हथकंडों से उपभोक्ताओं के ऊपर कृत्रिम आवश्यकताओं को जबरन थोपकर बाजारवादी संस्कृति को बढ़ाने की साजिश और परिणामस्वरूप दिन-प्रतिदिन अप्रतिहत बढ़ते जाने वाली महंगाई को उजागर किया गया है। इनकी कहानियाँ 'नई कहानी' की कहानियों से नितांत भिन्न है। इस संदर्भ में स्वयं दूधनाथ सिंह का कथन है- इन कहानियों ने एक जमाने में हिंदी-कहानी में एक उत्तेजक परिस्थिति पैदा कर दी थी। कहानी के क्षेत्र में अपने सारे आरोपों-प्रत्यारोपों के बावजूद इनकी ताजगी और इनका अनहोनापन अभी भी बरकरार है। इस कहानीकार के बहुत सारे समकालीनों ने इनकी तर्ज पर कहानी लिखने की कोशिश की लेकिन इसमें वे असफल ही नहीं हुए, हास्यास्पद भी बनें। सच बात यह है कि इसी नकल के प्रयास में बहुत सारे कहानीकार बर्बाद हो गए। इस बर्बादी से जो सबक मिलता है, वह यह कि अपनी ही तरह लिखें।[4]

'सुखान्त' कहानी संग्रह में कुल पांच कहानी संकलित है- (1) स्वर्गवासी (2) शिनाख्त (3) उत्सव (4) विजेता (5) सुखान्त। इस कहानी संग्रह की प्रायः सभी कहानियों में दूधनाथ सिंह ने युवाओं में दिन-प्रतिदिन बढ़ते जाने वाली यौन उच्छृंखलता पर कटाक्ष के माध्यम से उन्हें सही दिशा देकर समाज को गर्त में जाने से बचाने की कोशिश की है। इन कहानियों के माध्यम से रचनाकार ने यह भी दिखाने की कोशिश की है कि भारतीय समाज के गरीब तबके के लोग सामाजिक नियंताओं के षड्यंत्रों के आगे किस प्रकार विवश होकर भाग्यवाद और नियतिवाद जैसे खोखले दर्शनों के प्रति धीरे-धीरे और भी आस्थावान होते जा रहे हैं। इस संग्रह की कहानियों में दूधनाथ सिंह इस बात पर कई बार जोर देते हैं कि देश के आजाद हो जाने, जमींदारी प्रथा के उन्मूलन होने तथा इतनी वैज्ञानिक प्रगति करने के पश्चात आज भी हमारा समाज सामंतवादी मानसिकता से मुक्त नहीं हो पाया है। इस संग्रह की कहानियों का शिल्प बहुत ही प्रभावशाली है। इस संग्रह की कहानियाँ शब्दार्थ को अंदर से बाहर की ओर फेंकती है और इस तरह कथा की एक नयी संरचना का इजाद करती है।

तीसरा कहानी संग्रह 'प्रेम कथा का अंत न कोई' में भी पांच कहानी संकलित हैं- (1) वे इन्द्रधनुष (2) बिस्तर (3) ममी तुम उदास क्यों हो (4) सीखचों के भीतर (5) आज इतवार था। इस संग्रह की कहानियों में अधिकांश विफल प्रेम की कहानी है, साथ ही स्वतंत्रता के पश्चात राजनीतिक दिशाहीनता के कारण युवाओं में फैलती जा रही आजादी से मोहभंग की स्थिति, पूंजीवादी सभ्यता के प्रसार के कारण परिवार के लोगों में व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के पनपने से धीरे-धीरे संयुक्त परिवार की टूटने, एकल परिवारों में फैलते जा रहे विफल दाम्पत्य जीवन को बड़ी ही कुशलता से उकेरा गया है। दूधनाथ सिंह जी इस संग्रह की भूमिका में लिखते हैं- ये कहानियाँ उसी दौर में लिखी गई, जिस दौर में 'सपाट चेहरे वाला आदमी' और 'सुखान्त' संग्रहों की कहानियाँ। मेरे पिछले, उपर्युक्त संग्रहों से किसी भी माने में कम नहीं हैं।

कहानी संग्रह 'माई का शोकगीत' में पांच कहानी संकलित है- (1) हुंडार (2) जॉर्ज मेकवान (3) गुप्तदान (4) लौटना (5) माई का शोकगीत। 'हुंडार' कहानी में उच्च जाति के पुरुषों द्वारा निम्न जाति की महिलाओं के दैहिक शोषण को बड़ी ही मार्मिकता से उजागर किया गया है। 'जॉर्ज मेकवान' उन गरीब कलाकारों की व्यथा कथा को सामने लाता है जो अप्रतिम कला का निर्माण तो करते हैं किन्तु वह कला उनकी गरीबी को दूर नहीं कर पाती, परिणामस्वरूप, कलाकार आज भी रोटी के लिए तरसते हैं। 'गुप्तदान' मंत्रालयों में चल रही घूसखोरी की कहानी बयान करती है और यह दिखाती है कि कैसे कोई मंत्री बिना गुप्तदान लिए कोई प्रोजेक्ट मंजूर नहीं करता है। 'लौटना' कहानी में दूधनाथ सिंह जी ने बुजुर्गों के साथ बच्चों के मन में झांकने की कोशिश की है। इस कहानी में दूधनाथ जी का मनोविज्ञान देखते ही बनता है। इस संग्रह की कहानियों में लेखक ने राजनेताओं और उद्योगपतियों की मिली भगत से भारतीय समाज में फैल चुके भ्रष्टाचार, घूसखोरी, महंगाई, जुगाड़बाजी आदि विकृत्तियों को उजागर किया है। 'माई का शोकगीत' भारतीय समाज में महिलाओं की शारीरिक और मानसिक यातना जैसे घरेलू हिंसा की कहानी है। इस कहानी के माध्यम से दूधनाथ जी स्त्रियों को अपने ऊपर हो रही यातनाओं का बहिष्कार कर पुरुषों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए प्रेरित करते हैं- क्यों? क्या मरद हमें दाम देता है? दाम देता नहीं... उल्टे लतियाता भी है। तुम अभी छुट्टा घूम रही हो ननद रानी ! तुम क्या जानो। लेकिन कुछ हमसे भी गियान ले लो। हम कहते हैं कि जब तक हम खाना पकाते रहेंगे, गुलाम बने रहेंगे। और गुलाम बने रहेंगे तो लतियाए भी जाते रहेंगे। तुम और तुम्हारे गान्ही महतमा भारतमाता सौ बार सात समुन्दर पार से छुड़ा लायें... ये गुलामी बनी रहेगी।[6]

नौ कहानी को संकलित कर दूधनाथ सिंह ने 'धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे' कहानी संग्रह की रचना की- (1) काशी नरेश से पूछो (2) रेत (3) दुर्गन्ध (4) सन्नाटा चाहिए (5) आखिरी छलांग (6) वारिस (7) नपनी (8) वह लौटता नहीं (9) धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे। इस संग्रह की कहानियों में लेखक ने भारत के सामाजिक यथार्थ को उद्घाटित करने की कोशिश की है। इस संग्रह के बारे में स्वयं दूधनाथ सिंह का कथन है - धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे प्रतीकों और फैंटेसी की कहानी नहीं है। वह हमारे जीवन की एक दुर्घटना, जो आम है, उस पर प्रतिष्ठित है। चुपचाप माँग पर स्त्रियों का खरीदना और बेचना। जो लोग कहते हैं कि इस कहानी का कथ्य पुराना है, वे उत्तर प्रदेश के पूर्वी इलाकों और बिहार के बहुत सारे हिस्सों के आज के जीवन से परिचित नहीं हैं। जहाँ लड़कियों की खरीद फरोख्त आम है।[7] आज गंगा का प्रदूषण स्तर इतना बढ़ गया है कि गंगा की स्वच्छता के लिए भारत सरकार द्वारा 'नमामि गंगे' योजना चलाई जा रही है, दूधनाथ सिंह ने अपनी कहानी 'काशी नरेश से पूछो' में वाराणसी शहर में गंदगी के साम्राज्य और गंगा के प्रदूषण को मुख्य विषय बनाया तथा गाँवों में रहने वाले लोगों के रहन सहन का चित्रखिंचित वर्णन किया है। देश को स्वतंत्र हुए दशकों बीत जाने के बावजूद हमारे समाज में निम्न वर्ग कैसे अभी तक अपनी परंपराओं और रूढ़ियों की बेड़ियों में फंसा हुआ है इसका वर्णन 'रेत' कहानी में मिलता है। यह कहानी तत्कालीन समाज में सामंतवादियों द्वारा अपनाने वाली रहन-सहन के तौर तरीकों को भी उजागर करता